http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 6, 50-51

Article ID:605

सरसों की उन्नत उत्पादन तकनीक

योगिता बाली[1], रेणु देवी[2], प्रियंका कांटवा[3]

[1]जिला विस्तार विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, भिवानी
[2]जिला विस्तार विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, सिरसा
[3]पी.एच.डी. छात्रा, सीसीएस हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (CCSHAU), हिसार

***अनुरूपी लेखक**

योगिता बाली*

हरियाणा की मुख्य तिलहनी फसलों में तेरिया, भूरी सरसों, पीली सरसों, राय तथा तारामीरा फसलें शामिल है। सरसों हरियाणा की मुख्य रबी फसल है। अच्छी पैदावार पाने के लिए उन्नत उत्पादन तकनीक को अपनाया जाये। सबसे पहले प्रमाणित बीजों किस्मों का चयन करे उसके बाद बीज उपचार अवश्य करें ताकि शुरूवाती अवस्था में इसे मृदा जनित व अन्य रोगों से बचाव मिल सके। बिजाई के तुरन्त बाद (24 से 48 घंटों में) खरपतवार नियंत्रण के लिए पेंडीमिथालिन (pendimethalin) का बलेंकेट एप्लीकेशन (blanket application) करें ताकि खरपतवार को उगने से रोका जा सकें।

खेत की तैयारी:

2 - 3 जुताई करने के बाद सुहागा अवश्य लगायें ताकि खेत में नमी बनी रहे। इससे बीजों के जमाव पर भी अच्छा असर पड़ता है।

बीज की मात्रा व समय:

सिचिंत अवस्था में 1.5 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ काफी है। लेकिन बरानी अवस्था में 2 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज डाले। राया की बिजाई का उपयुक्त समय 20 सितम्बर से 20 अक्टूबर है। जबकि सरसों के लिए 25 सितम्बर से 10 अक्टूबर और तारामीरा के लिए बिजाई पूरा अक्टूबर में की जा सकती है।

बिजाई का तरीका:

पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेंटीमीटर, गहरी 4 से 5 सेंटीमीटर, पौधों से पौधों की दूरी 15 सेंटीमीटर रखें ताकि पौधे में अच्छा फुटाव हो सके। यदि अधिक फुटाव वाली किस्म हो तो पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। अच्छी पैदावार के लिए संतुलित मात्रा में खाद का प्रयोग करना भी उतना ही आवश्यक है।

मुख्य ध्यान रखने योग्य क्रिया:

Azotika और PSB का प्रयोग अवश्य करें। यदि 6 टन गोबर की खाद डालने पर नाइट्रोजन की पूरी मात्रा भी डाले परन्तु फॉस्फोरस का प्रयोग न करें। पर ध्यान रखे तिलहनी फसलों में तेल की मात्रा में वृद्धि करने के लिए सल्फर का प्रयोग करें। कभी कभी पौधे जस्ते की कमी के भी लक्षण दिखाते है। इसकी कमी के लक्षण बिजाई के 2 दिन बाद दिखाई देते है। पत्तियों का आकार छोटा किनारे गुलाबी परन्तु शिराए हरी रहती है और बाकी हिस्सा पीला सफेद जो जाता है। इसके कारण फूल व फली देरी से बनती है। इसकी कमी को पूरा करने के लिए 10 किलोग्रार्म $ZnSo_4$ प्रति एकड़, आखिरी जुताई से पहले खेत में डाले। यदि खड़ी फसल में कमी के लक्षण दिखाई देने पर 500 ग्राम जिंक सल्फेट और 2.5 किलोग्राम यूरिया का धोल बनाकर 10 - 15 दिन के अन्तर पर दो छिड़काव करें। अच्छी फसल लेने के लिए दो सिचाईयाँ करें एक तो फूल निकलने के समय और दूसरी फलियाँ लगाते समय। यदि पानी की कमी हो तो फूल आते वक्त एक सिचांई बहुत ही लाभदायक होती है। तारामीरा में सिचांई की कोई आवश्यकता नहीं होती। साथ ही बिजाई के बाद तीन तथा पाँच सप्ताह बाद दो गुडाई अवश्य करें। राया में मरगोजा परजीवी का बड़ा ही बुरा असर पड़ता है।

इसके नियंत्रण के लिए Glyphosate 25 मिलीलीटर 25 - 30 दिन बाद व 50 मिलीलीटर 50 दिन बाद 150 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। फलैट नौजत व नैपसैक स्प्रे पंप का प्रयोग करे। ध्यान रखे जब छिड़काव करना हो तो उस समय खेत में नमी बनी रहे। सुबह के समय पत्तों पर ओस/नमी बनी होती है तब छिड़काव न करें।

मुख्य बिमारियाँ:

1.**मरोड़ियाँ:** इसमें पौधा झाड़ी नुमा आकार ले लेता है। फूलों की जगह पत्तियाँ सी आ जाती है।

2.**सफेद रतूआ**: पत्तों कि निचली सतह पर सफेद धब्बे बन जाते है। इसे स्टैग डैड कहते है। फूल बेढंगे आकार के हो जाते है। यह ज्यादातर पछेती फसल में अधिक होता है।

रोकथाम: इसके लिए डाइथेन M-45, 600 ग्राम की दर से 250-300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करे। अच्छे परिणाम के लिए 15 दिन के अन्तर पर 3-4 बार छिड़काव करें।

3.**तना गलन**: इसमें तनों पर भूरे जलसिक्तक धब्बे बनते है। इसके बाद सफेद फफूंद की तरह बन जाते है। जब फूल व फलियाँ बनने के समय पर तने टूट जाते है और पौधा सूख जाता है। तनों के भीतर काले रंग के पिंड (स्कलरोशिया) बनते है।

रोकथाम: बिजाई से पहले बीज उपचार करना चाहिए। 2ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से और 45 - 50 दिन तथ 65 - 70 दिन के बाद बाविस्टिन का 0.1% की दर से छिड़काव करें।